Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

॥ प.पू.पं. धर्म-सुरेन्द्र-रामसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥

मनुष्य जीवन को सुशोभित करने वाले

श्री सम्यक्त्व सहित बार व्रत की संक्षिप्त जानकारी

प्रेरणा

प.पू. तपागच्छाधिपति आचार्य
विजय रामसूरीश्वरजी महाराजा (डहेलावाले)
के शिष्यरत्न
आचार्य विजय जगच्चन्द्रसूरि म.सा.

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

सच्चे श्रावक बनें

(प्रथम आवृत्ति में से)

महान पुण्योदय से मानव देह मिलने के बाद ते मुनि यन मोक्ष जाना ही हम सभी का एक मात्र लक्ष्य होना चाहिए। तथा उस चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति के लिये ही हमारी तमाम आराधना होती है। ज्ञानी भगवंत कहते हैं कि यदि मोक्ष प्राप्ति के लिये हमारा सतत पुरूषार्थ होगा तब हम इस महा मूल्यवान मनुष्य जन्म को सार्थक कर सकते है, बाकि तो इस महा दारूण और अति भयंकर संसार के अंदर विषय-कषायों में गिरे हुए जीव अनेक कुकर्मो को कर अपना अनंत संसार बढ़ाकर दुर्गति में चले जाते है और अनंत दुःख स्वरूप जन्म-मरण की परम्परा खड़ी कर लेते है।

कहीं हमारी भी ये स्थिति न हो, इसलिए परम कृपालु, अनंत उपकारी, तारक तीर्थंकर परमात्मा ने हम सभी के कल्याण हेतु मोक्ष प्रापक आराधना का मार्ग दिखाया है। जीवन का लक्ष्य यदि मोक्ष रसिक जीव को साधु जीवन के प्रति जबरदस्त पक्षपात होता है। जल बिना जैसे मछली तड़पती है, वैसी ही दशा संयम बिना मुमुक्षु की होती है। "संयम कबहि मिले ससनेहि प्यारा" की एकमात्र भावना उसके अंतर मे सदा गुंजती रहती है।

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

तथापि यदि चारित्र मोहनीय कर्म के उदय से सर्वविरतिघर साधु बनने तथा सर्व संग त्याग के मार्ग पर महाभिनिष्क्रमण करने के लिए यो तो स्वयम को थिर्योल्लास न जगता हो अथवा कोई अन्तराय आ जाता है तब मोर्क्षार्थी जीव देशविरतिघर सच्चा श्रावक बन्ने के लिए देव और गुरु की साक्षी में सम्यक्त्व सहित बारह व्रतो को ग्रहण करने के लिए सहर्ष तेयार हो जाता है।

युँ भी भूतकाल में इस जीव आत्मा ने बहुत पाप किये है, वर्तमानजीवन भी पापो से युक्त है, लेकिन अब भविष्य दुःखदायी नही बने उसके लिए वर्तमान जीवन सुंदर बनाना बहुत जरूरी है। ज्ञानी भगवंतो ने "अइयं निंदामी, पड़ीपुन्नं संवरेमि, अणागयं, पच्चक्खामि" की बात कही है। इस लिए भव भव के पुद्‌गल वोसिरा कर अतित के पापो कि भवआलोचना एवं भविष्य में पापनही करने की प्रतिज्ञा द्वारा वर्तमान जीवन को संयमित बनाना जरूरी है।

साधु को तो पांच महाव्रत पूर्ण रूप से पालने होते है उसमे तनिक भी छुट छाट नही होती, लेकीन श्रावक के बारह व्रतो में बहुत सी छूट-छाट हो सकती है। इससे जीवन में अहिसा, संयम और तप का प्रगटिकरण होता है। अधिक त्याग पूर्वक व्रत ग्रहण करना चाहिए। बच्चे, युवान, प्रौढ तथा वृद्ध हर कोई इन नियमो का सरलता से स्वीकार कर सके इस तरह इनको यहां समझाया गया है।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

जीवन पर्यन्त अरिहंत परमात्मा, वो ही मेरे देव
पंचमहाव्रतधारी साधु भगवंत, वो ही मेरे गुरु
और केवली भगवंत के द्वारा कहा गया
धर्म, वो ही मेरा धर्म है।

इस प्रकार से मैने सम्यक्त्व का स्वीकार किया है।

(सम्यक्त :- देव गुरु धर्म के प्रति श्रध्धा,
सम्यक्तदर्शन, बोधि बिज, समकित)

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

१. में देव गुरु धर्म की कभी निंदा नही करुंगा।

२. में जिन वचन के प्रति हार्दिक श्रध्धा धारण करता हुं।

३. दुसरे देव देवीयों का नियम-मानता-तावीज विगेरे मे नही पडुंगा।

४. जैन धर्म के पर्वो की आराधना करुंगा किन्तु अन्य धर्मी के त्यौहार को नही करुंगा।

५. हमेशा भगवान की पूजा करुंगा।

६. हमेशा गुरु भगवंत को वंदन करुंगा।

७. प्रतिदिन प्रभु दर्शन करने के बाद में नवकारशी का पच्चक्खाण करुंगा।

८. प्रतिदिन रात्रि भोजन का त्याग करुंगा।

९. देव-गुरु धर्म या माता-पिता किसी के भी सोगन नही खाउँगा।

१०. गोत्र देवता, कुल देवता, सम्यकद्रष्टि देव देवी की यतनां।

(१) पहला व्रत स्थुल प्राणातिपात विरमण व्रत -

मुल प्रतिज्ञा : - मैं किसी भी प्रकार के हिलते चलते त्रसजीव को किसी की प्रकार के अपराध बिना मैं स्वयं मारुंगा नही, दुसरो के द्वारा मराउंगा नही और मारने वालों की अनुमोदना करुंगा नहीं।

www.jaintatvagyanshala.org

१. में देव गुरु धर्म की कभी निंदा नही करुंगा।

१. किसी भी प्रकार की जंतुनाशक दवा को छाटुंगा नही और दुसरो से छटवाउंगा नही।

२. किसी भी प्रकार की जंतुनाशक दवा का व्यापार नहीं करुंगा।

३. गर्भपात करुंगा नही और कराउंगा नहीं।

४. बिना छाना हुआ पानी का उपयोग नही करुंगा।

५. चुला गैस विगेरे पुंज करके उपयोग में लेउंगा।

६. फटाके फोडुंगा नही, दुसरे से फोडाउंगा नही और फटाके का व्यापार भी नहीं करुंगा।

७. पशु पक्षी या ईन्सान की आकृती की चीज नही खाउंगा।

८. पशु पक्षी या ईन्सान के चित्र वाले कपड़े नही पहनुंगा तथा कभी उसको नही धोउंगा।

९. हरी वनस्पति या पानी के झरणे पर नही चलुंगा।

१०. संक्षीप्त में, कही भी जीव विराधना हो एसा कार्य नही करुंगा।

www.jaintatvagyanshala.org

(२) स्थूल मृषावाद विरमणव्रत :-

मूल प्रतिज्ञा :- कन्या, गाय, भूमि, धरोहर, गलत साक्षी ये पांच प्रकार के में असत्य नहीं बोलुंगा दुसरो से नहीं बोलाऊं और बोलने वाले की मैं अनुमोदना नहीं करुंगा।

१. किसी के ह्रदय को ठेस पहुंचे एसा कठोर, वचन नहीं बोलुंगा।

२. किसी को गलत आक्षेप लगे एसे वचन नहीं बोलुंगा किसी को मेहणा टोणा नहीं मारुंगा।

३. किसी की निन्दा तथा चुगली नहीं करुंगा।

४. विश्वासघात हो ऐसे वचन नहीं बोलुंगा।

५. किसी को गाली नहीं दुंगा।

६. गलत साईन नहीं करुंगा, गलत साक्षी नहीं करुंगा।

७. बिना टिकीट से मुसाफरी नहीं करुंगा तथा सीनेमा नहीं देखुंगा।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

(३) स्थूल अदत्तादान विरमण व्रतः-

मूल प्रतिज्ञाः- संसार के व्यवहार में जिसको चोरी मानते हो एसी छोटी बड़ी कोइ भी चोरी में नहीं करुंगा दुसरो से नहीं कराऊंगा करने वालो की अनुमोदना भी नहीं करुंगा।

१. परीक्षा में चोरी नहीं करुंगा।

२. किसी भी पतंग दोरी विगेरे नहीं चोरुंगा तथा लुटुंगा नही।

३. सामान बेचन में गलत भाव नही लगाऊंगा।

४. दुसरों की थापण(धरोहर) या किराये का मकान विगेरे को हजम(हड़प) नही करुंगा।

५. किसी को वापीस देने के रकम को हजम नही करुंगा।

६. किसी धर्मादा की बोली या घी की बोली के रूपये तत्काल जमा करा दुंगा।

(४) स्थूल मैथुन विरमणव्रतः

मूल प्रतिज्ञाः संपूर्ण अथवा कुछ दिनो में स्व पत्नि या स्व पति के सिवाय किसी के भी साथ में अब्रह्म का सेवन नहीं करुंगा। नही कराउंगा या करते हुए का अनुमोदन नही करुंगा। स्व पति या स्व पत्नि में संतोष और पर पुरुष और पर स्त्री का त्याग।

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

१. सभी पर पुरुष को पिता-भाई और पुत्र के समान मानुंगी। तथा सभी पर स्त्री को माता बहेन तथा पुत्री के समान मानुंगा।
२. विजातीय के साथ विकार दृष्टि नही करुंगा अगर विकार दृष्टि हो गयी तो .... दंड करुंगा।
३. पांच तीथी पर्युषणा पर्व, आयंबिल की ओली,छ अट्ठाई विगेरे पर्व दिनो में ब्रह्मचर्य का पालन करुंगा।
४. स्वयं के परिवार के बिना किसी की शादी में रस नही लेऊंगा।
५. विकार उत्पन्न हो सके एसा साधन जैसे टी.वी., सिनेमा, वीडीयो, केसेट, नाटक, सिरियल वगेरे नही देखुंगा।
६. नवरात्री में रास गरबा डिस्को विगेरे खेलने या देखने के लिए नहीं जाऊंगा।
७. दुसरो को विकार उत्पन्न हो एसे वेष नही पहेनुंगा।

(५) स्थूल परिग्रह परिमाण व्रत

मूल प्रतिज्ञा :-नौ प्रकार के परिग्रह जैसे धन, अनाज, खेत, वस्तु, सोना, चांदी आभूषण बर्तन आदि द्विपद चतुष्पद आदि नौ प्रकार का परिग्रह नहीं करुंगा दुसरो से नहीं कराऊंगा करते हुए का अनुमोदन नहीं करुंगा।

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

१. धन-रोकड़ा रूपया धारण करना

२. सोना-चांदी विगेर तोला में धारण करना।

३. मकान दुकान जमीन विगेर संख्या में धारण करना।

(६) दिक्क परिमाण व्रतः

मूल प्रतिज्ञाः- चार दिशा, चारविदिशा, उपर-निचे कुल दश दिशा में इतने प्रमाण से ज्यादा नहीं जाऊंगा।

१. मैं कभी भी भारत देश के बाहर नहीं जाऊंगा।

२. मैं परदेश में जींदगी भर नही रहुंगा।

३. एक वर्ष में ....से ज्यादा बार परदेश नहीं जाऊंगा।

४. चातुर्मास में आवश्यक कार्य बिना दुसरे गांव या परदेश में नहीं जाऊंगा।

(७) भोगोपभोग विरमणव्रतः-

मूल प्रतिज्ञा :- भोग उपभोग की चीज में जो अत्यंत हिसंक हो वह और २२ अभक्ष्य और ३२ अनंतकाय का त्याग करना तथा हमेशा उपयोग में आने वाली चीजो की मर्यादा करनी जिससे पाप से बच सके।

www.jaintatvagyanshala.org

१. मैं २२ अभक्ष्य कभी नहीं खाऊंगा ।

२. मैं ३२ अनंतकाय विगेरे कंदमूल कभी नहीं खाऊंगा।

३. अत्यंत आरंभ समारंभ वाले १५कर्मादान का व्यापार कभी नहीं करुंगा।

४. मैं होटल या बाजार की चीजे कभी नहीं खाऊंगा।

५. मैं पांच तिथि या पर्व तिथि के दिन हरी सब्जी त्याग करुंगा।

६. आईस्क्रीम फ्रिज का पानी, ब्रेड, बटर , पाँव विगैरे नहीं खाऊंगा।

७. प्रतिदिन १४ नियम धारण करुंगा।

८. फाल्गुन सुदि १४ से कार्तिक सुदि १४ तक भाजी, पालक, धनीया तथा मेवा नहीं खाऊंगा।

९. आद्रा नक्षत्र से फाल्गुन सुदि पूनम तक आम और रायण नहीं खाऊंगा।

(८) अनर्थदंड विरमणव्रतः

मूल प्रतिज्ञा :- कोई भी प्रयोजन बिना पापकर्म बंध हो ऐसी प्रवृत्ति में नहीं करुंगा दुसरो से नहीं कराउंगा करते हुआ का अनुमोदन नहीं करुंगा।

www.jaintatvagyanshala.org

Acharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

१. दूसरों की हत्या या आत्माहत्या का मन से भी विचार नहीं करुंगा।

२. सिनेमा नाटक, टी.वी., विडियो चेनल सरकस नही देखुंगा।

३. पतंग नहीं उड़ाऊंगा।

४. होली धुलेटी नहीं खेलुंगा।

५. नवरात्री विगेरे पर्व नही मनाऊंगा तथा नहीं खेलुंगा।

६. ताशपति, जुआ विगेरे नहीं खेलुंगा।

७. महिलां/भाईयों के साथ में दांडिया रास डीस्को गरबा विगेरे नहीं खेलुंगा।

(९) सामायिक व्रतः

१. मैं एक वर्ष में इतनी सामायिक करुंगा । मैं एक वर्ष में इतने प्रतिक्रमण करुंगा।

(१०) देसावगासिक व्रतः

१४ नियम धारण करना अथवा ८ सामायिक २ प्रतिक्रमण एक दिन करना।

www.jaintatvagyanshala.org

१. मैं एक वर्ष में इतनी बार देशावगासिक करुंगा।

(११) पौषधव्रतः

१. मैं एक वर्ष में इतने अहोरात्री पौषध करुंगा।

(१२) अतिथि संविभाग व्रतः

दिनरात का (अहोरात्री) उपवास सहित पौषध करके पारणे में साधुसाध्वीजी म.सा. को वहोराकरके एकाशना करना।

१. मैं एक वर्ष में इतने अतिथि संविभाग व्रत करुंगा।

२. मैं एक वर्ष में इतने रूपये सार्धमिक भक्ति मे वापरुंगा।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

१४) नीयम

सचित-दव्व, विगईवाणह-तंबोल-वत्थ-कुसुमेसु।
वाहण-सयण विवण बंभ-दिसि-न्हाण-भत्तेसु।।

१. सचितः- जीववाली चीज जैसे अनाज, कच्चा नमक, सोंप, जीरा कच्ची सब्जी, फ्रुट विगैरे यह नियम संख्या से या वजन से दो प्रकार मे से कोई भी प्रकार से धार सकते है।

२. द्रव्यः- पूरे दिन में जितने भी चिज मुंह में डालने मे आती है उसको द्रव्य कहते है जैसे पानी, भोजन, दुध, नमक, मंजन विगैरे।

३. विगईः- छोटी विगई छे (६) होती है। दुध, दहि, घी, तेल, गुड़ तथा कड़ा विगई इन छ विगई मे से कोई भी विगई कच्ची या मूल से त्याग करनी बड़ी विगई चार शहद, मक्खन, मांस, शराब जिनका सर्वथा त्याग करना।

४. वाणहः- जूते, बुट, स्लीपर, सेन्डल विगैरे की संख्या धारण करनी।

www.jaintatvagyanshala.org

५. तंबोलः- पान, सुपारी, इलायची, लौंग, सोंप, विगैरे मुखवास की चिज संख्या से या वजन से धारण करना।

६. वस्त्रः- पहनने के कपड़े की संख्या धारण करनी।

७. कुसुमेसुः- सुंघने में आने वाली चीज जैसे घी, तेल, अत्तर विगैरे का प्रमाण नक्की करना तथा घी, तेल के पुरे डिब्बे नहीं सुघने।

८. वाहनः- मुसाफरी करने वाहन जमीन मे चलने वाले, आकाश में चलने वाले तथा पानी में चलने वाले की संख्या धारण करनी।

९. शयन :- सोने और बैठने के लिए बिछाने वाली चिजो की संख्या धारण करनी । जैसे पाट, पलंग, सोफा, गद्दी वगैरे।

१०. विलेपन :- शरीर पर लगाने के द्रव्य जैसे तेल, अत्तर, चंदन का तेल, साबुन , बाम, हल्दी, नमक वगैरे वजन से धारण करना।

११. ब्रह्मचर्यः- स्वपति में संतोष तथा पर पुरुष त्याग, पर्वतिथि वगेरे में काया से संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना।

www.jaintatvagyanshala.org

१२. दिशा :- चार दिशा चारविदिशा उपर (सीढी, लिफ्ट, पर्वत वगेरे की ऊंचाई) नीचे (भोयरा) वगेरे का प्रमाण कि. मी. से धारण करना।

१३. स्नानः- कितनी बार स्नान करना वह धारण करना।

१४. भत्तेषुः- मिट्टी, नमक, चूना,सूरमा विगेरे वडन से धारण करना।

* पृथ्वीकाय :- मिट्टी, नमक, सुरमा, घुना, क्षार, आदिका नियम वजन से धारण करना

(सचित्त की जयणा)

* अपकायः- पानी विगैरे कितना पीना तता स्नान करने में कपड़े धोने में कीतनी बालटी वापरना वह धारण करना तथा नदी तालाब या नल के नीचे बैठकर स्नान नहीं करना।

* तेऊकायः- अग्नि, लाईट, स्टव, गैस, भट्टी तथा इलेक्ट्रिक से साधन की संख्या धारण करनी।

* वाऊकायः- पंखा,ए.सी., झुला विगैरे की संख्या धारण करनी।

www.jaintatvagyanshala.org

* वनस्पतिकायः- सचित तथा अचित दोनों की संख्या धारण करनी।

* त्रसकायः- किसी भी जीव को मारने की बुद्धि से नहीं मारना। चलते समय उपयोग पूर्वक चलना जिससे किसी जीव की हिंसा नहीं हो।ट

* असिः- तलवार, बंदुक, छुरी, चाकु, सरोता, कैंची, सुई, आलपीन, विगैरे संख्या से धारण करना।

* मसिः- स्याही, कलम, बॉलपेन, पेन, पेन्सिल विगैरे की संख्या धारण करनी।

* कृषिः- खेती के साधनो की संख्या धारण करनी। (कंधे का समावेस भी कृषि में आता है।)

जिनकथित इन नियमों को पालने के द्वारा अविरतिजन्य पापो से रुक करके सर्वसंवर भाव में आने के द्वारा परम्परा से सभी जीव मोक्ष सुख को प्राप्त करने वाले बने यही शुभेच्छा।

www.jaintatvagyanshala.org

Aacharya vijay shri Surendrasuriswarji Jain Tatvagyanshala

सौजन्य

श्री जयवंतलाल अमुलख शाह की
पुण्यस्मृति में
श्री कंचनबेन जयवंतलाल शाह
हितेशभाई, हीनाबेन, फोरम, आर्ची

www.jaintatvagyanshala.org